

श्रीमद्भागवतम्

प्रथम स्कन्ध



श्रीमद् भागवत पुराण

अध्याय 11

भगवान् श्रीकृष्ण का द्वारका में
प्रवेश

श्रीलगुरुदेव

श्रीश्रीगुरु- गौरांगौ जयतः

श्लोक 1: सूत गोरुवामी ने कहा :
आनर्तो के देश के नाम से विख्यात
अपनी अत्यन्त समृद्ध राजनगरी
(द्वारका) के निकट पहुँच कर, भगवान्
ने अपना आगमन उद्धोषित करने
तथा निवासियों की निराशा को शांत
करने के लिए अपना शुभ शंख
बजाया।

श्लोक 2: श्वेत तथा मोटे पेंदेवाला
शंख, भगवान् के हाथों द्वारा पकड़ा
जाकर तथा उनके द्वारा बजाया
जाकर, ऐसा लग रहा था मानो उनके

दिव्य होठों का स्पर्श करके लाल हो गया हो। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो कोई श्वेत हंस लाल रंग के कमलदण्डों के बीच खेल रहा हो।

श्लोक 3: भौतिक जगत में साक्षात् भय को भी भयभीत बनानेवाले, उस शब्द को सुनकर द्वारका के नागरिक उनकी ओर तेजी से दौड़ने लगे, जिससे वे भक्तों के रक्षक भगवान् का चिर अभिलषित दर्शन कर सकें।

श्लोक 4-5: सारे नागरिक अपनी-अपनी भेंटें लिये हुए भगवान्

के सम्मुख आये और उन्हें उन परम संतुष्ट तथा आत्म-निर्भर भगवान् को अर्पित किया, जो अपनी निजी शक्ति से अन्यों की आवश्यकताओं की निरन्तर पूर्ति करते रहते हैं। ये भेंटें सूर्य को दिये गये दीप-दान जैसी थीं। फिर भी सारे नागरिक भगवान् के स्वागत में ऐसी आह्लादमयी भाषा में बोलने लगे, मानो बच्चे अपने अभिभावक तथा पिता का स्वागत कर रहे हों।

श्लोक 6: नागरिकों ने कहा : हे भगवन्, आप ब्रह्मा, चारों कुमार तथा

स्वर्ग के राजा जैसे समस्त देवताओं द्वारा भी पूजित हैं। आप उन लोगों के परम आश्रय हैं, जो जीवन का सर्वोच्च लाभ उठाने के लिए इच्छुक हैं। आप परम दिव्य भगवान् हैं और प्रबल काल भी आप पर अपना प्रभाव नहीं दिखा सकता।

श्लोक 7: हे ब्रह्माण्ड के स्रष्टा, आप हमारे माता, शुभचिन्तक, प्रभु, पिता, आध्यात्मिक गुरु तथा आराध्य देव हैं। हम आपके चरण-चिह्नों पर चलते हुए सभी प्रकार से सफल हुए हैं। अतएव हमारी प्रार्थना है कि आप

हमें अपनी कृपा का आशीर्वाद देते
रहें।

श्लोक 8: अहो! यह तो हमारा
सौभाग्य है कि आज पुनः आपकी
उपस्थिति से हम आपके संरक्षण में
आ गये, क्योंकि आप स्वर्ग के
निवासियों के यहाँ भी कभी-कभी
जाते हैं। आपके स्मितमुख को देख
पाना हमारे लिए अब सम्भव हो सका
है, जो स्निग्ध चितवन से पूर्ण है। अब
हम आपके सर्व-सौभाग्यशाली दिव्य
रूप का दर्शन कर सकते हैं।

श्लोक 9: हे कमलनयन भगवान्,
आप जब भी अपने मित्रों तथा
सम्बन्धियों से भेंट करने मथुरा,
वृन्दावन या हस्तिनापुर चले जाते हैं,
तो आपकी अनुपस्थिति में प्रत्येक
क्षण हमें करोड़ों वर्षों के समान प्रतीत
होता है। हे अच्युत, उस समय हमारी
आँखें इस तरह व्यर्थ हो जाती हैं मानो
सूर्य से बिछुड़ गई हों।

श्लोक 10: हे स्वामी, यदि आप
सारे समय बाहर रहते हैं, तो हम
आपके उस मनोहर मुखमण्डल को
नहीं देख पाते, जिसकी मुसकान

हमारे सारे कष्टों को दूर कर देती है। भला हम आपके बिना कैसे रह सकते हैं? उनकी वाणी सुनकर, प्रजा तथा भक्तों पर अत्यन्त दयालु भगवान् ने द्वारकापुरी में प्रवेश किया और उन सबों पर अपनी दिव्य दृष्टि डालते हुए उनका अभिनन्दन स्वीकार किया।

श्लोक 11: जिस प्रकार नागलोक की राजधानी भोगवती नागों के द्वारा रक्षित है, उसी तरह द्वारका की रक्षा कृष्ण के समान बलवान वृष्णि के वंशजों—भोज, मधु, दशार्ह, अर्ह,

कुकुर, अन्धक इत्यादि—द्वारा की जाती थी।

श्लोक 12: द्वारकापुरी समस्त ऋतुओं के ऐश्वर्य से पूर्ण थी। उसमें सर्वत्र आश्रम, उद्यान, पुष्पोद्यान, पार्क तथा कमलों से परिपूर्ण जलाशय थे।

श्लोक 13: भगवान् के स्वागतार्थ नगर का द्वार, घरों के दरवाजे तथा सड़कों के किनारे झंडियों से सजे बन्दनवार बहुत ही सुन्दर ढंग से केले के वृक्षों तथा आम की पत्तियों जैसे मांगलिक प्रतीकों से सजाये गये थे। झंडियाँ, फूल-मालाएँ तथा चित्रित

संकेत एवं लिखे गये सुवाक्य धूप को
अवरुद्ध कर रहे थे।

श्लोक 14: पथ, मार्गों, बाजारों
तथा चौकों को भलीभाँति झाड़-
बुहारकर उन पर सुगन्धित जल
छिड़का गया था और भगवान् का
स्वागत करने के लिए सर्वत्र फल-फूल
तथा अक्षत-अंकुर बिखेरे गये थे।

श्लोक 15: प्रत्येक घर के द्वार पर
दही, अक्षत फल, गन्ना तथा पूरे भरे
हुए जलपात्रों के साथ ही पूजन की
सामग्री, धूप तथा बत्तियाँ सजा दी
गयी थीं।

श्लोक 16-17: यह सुनकर कि परम प्रिय कृष्ण द्वारकाधाम पहुँच रहे हैं, महामना वसुदेव, अक्रूर, उग्रसेन, बलराम (अलौकिक शक्तिसम्पन्न), प्रद्युम्न, चारुदेष्ण तथा जाम्बवती-पुत्र साम्ब सभी इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने लेटना, बैठना तथा भोजन करना छोड़ दिया।

श्लोक 18: वे फूल थामे हुए ब्राह्मणों समेत रथों पर भगवान् की ओर तेजी से बढ़े। उनके आगे-आगे सौभाग्य-के प्रतीक हाथी थे। शंख तथा तुरही बज रहे थे और वैदिक

स्तोत्र उच्चरित हो रहे थे। इस प्रकार उन्होंने स्नेहसिक्त अभिवादन किया।

श्लोक 19: उसी समय सैकड़ों विख्यात वेश्याएँ विविध सवारियों पर आरूढ़ होकर आगे बढ़ चलीं। वे सभी भगवान् से मिलने के लिए अत्यन्त उत्सुक थीं और उनके सुन्दर मुख-मण्डल चमचमाते कुण्डलों से सुशोभित थे, जिनके कारण उनके ललाट की शोभा बढ़ रही थी।

श्लोक 20: कुशल नाटककार, कलाकार, नर्तक, गायक, पौराणिक, वंशावली-विशारद (भाट) तथा विद्वान

वक्ता (वाचक) सबों ने भगवान् के अलौकिक कार्यकलापों से प्रेरित होकर अपना- अपना योगदान दिया। इस प्रकार वे आगे बढ़ते गये।

श्लोक 21: भगवान् श्रीकृष्ण उनके निकट गये और उन्होंने अपने समस्त मित्रों, सम्बन्धियों, नागरिकों तथा उन समस्त लोगों को, जो उन्हें लेने तथा स्वागत करने के लिए आये थे, यथायोग्य सम्मान तथा आदर प्रदान किया।

श्लोक 22: सर्वशक्तिमान भगवान् ने वहाँ पर समुपस्थित लोगों को, यहाँ

तक कि नीच से नीच जाति वाले को,
अपना मस्तक झुकाकर, बधाई देकर,
आलिंगन करके, हाथ मिलाकर,
देखकर तथा हँसकर, आश्वासन देकर
तथा वरदान देकर उनका अभिवादन
किया।

श्लोक 23: तब भगवान् ने ज्येष्ठ-
वरेष्ठ सम्बन्धियों तथा अपनी-अपनी
पत्नियों के साथ आए अशक्त ब्राह्मणों
के साथ नगर में प्रवेश किया। वे सब
आशीर्वाद दे रहे थे और भगवान् के
यशों का गान कर रहे थे। दूसरे लोगों

ने भी भगवान् की महिमा की प्रशंसा की।

श्लोक 24: जब भगवान् राजमार्ग से होकर जा रहे थे, तो द्वारका के प्रतिष्ठित परिवारों की सभी स्त्रियाँ भगवान् का दर्शन करने के लिए अपने-अपने महलों की अटारियों पर चढ़ गईं। इसे वे एक महान् उत्सव समझ रही थीं।

श्लोक 25: द्वारकावासी समस्त सौन्दर्य के आगार अच्युत भगवान् को नित्य निहारने के अभ्यस्त थे, फिर भी वे कभी तृप्त नहीं होते थे।

श्लोक 26: भगवान् का वक्षस्थल
लक्ष्मी देवी का निवासस्थल है।
उनका चाँद जैसा मुखड़ा उन नेत्रों के
लिए जलपात्र के समान है, जो सुन्दर
वस्तुओं के लिए सदैव लालायित
रहते हैं। उनकी भुजाएँ प्रशासक
देवताओं के लिए आश्रयस्थल हैं और
उनके चरणकमल उन शुद्ध भक्तों की
शरणस्थली हैं, जो भगवान् के
अतिरिक्त न तो कुछ कहते हैं, न गाते
हैं।

श्लोक 27: जब भगवान् द्वारका
के राजमार्ग से होकर गुजर रहे थे, तब

एक श्वेत छत्र तानकर उनके सिर को धूप से बचाया जा रहा था। श्वेत पंखों वाले पंख (चंवर) अर्धवृत्ताकार में झल रहे थे और मार्ग पर फूलों की वर्षा हो रही थी। पीताम्बर तथा फूलों के हार से वे इस प्रकार प्रतीत हो रहे थे, मानो श्याम बादल एक ही साथ सूर्य, चन्द्रमा, बिजली तथा इन्द्रधनुष से घिर गया हो।

श्लोक 28: अपने पिता के घर में प्रवेश करने पर उन्हें उनकी माताओं ने गले लगाया और भगवान् ने उनके चरणों पर अपना शिर रखकर उन्हें

नमस्कार किया। माताओं में देवकी
(उनकी असली माता) प्रमुख थीं।

श्लोक 29: माताओं ने अपने पुत्र
को गले लगाने के बाद, उसे अपनी-
अपनी गोद में बिठाया। विशुद्ध स्नेह के
कारण उनके स्तनों से दूध निकल
आया। वे हर्ष से विभोर हो गईं और
उनके नेत्रों के अश्रुओं से भगवान् भीग
गये।

श्लोक 30: तत्पश्चात् भगवान्
अपने महलों में प्रविष्ट हुए, जो सभी
तरह से परिपूर्ण थे। उनमें उनकी

पत्नियाँ रहती थीं और वे सोलह हजार से अधिक थीं।

श्लोक 31: दीर्घकाल तक बाहर रहने के बाद अपने पति को घर आया देखकर श्रीकृष्ण की रानियाँ मन ही मन अत्यन्त हर्षित हुईं वे अपने-अपने आसनों तथा ध्यानों से तुरन्त उठकर खड़ी हो गईं सामाजिक प्रथा के अनुकूल, उन्होंने लज्जा से अपने मुख ढक लिये और दृष्टि नीची किये देखने लगीं।

श्लोक 32: रानियों की दुर्लभ्य उत्कण्ठा इतनी तीव्र थी कि लजाई

होने के कारण उन्होंने सर्वप्रथम अपने अन्तरतम से भगवान् का आलिंगन किया, फिर उन्होंने दृष्टि से उनका आलिंगन किया और तब अपने पुत्रों को उनका आलिंगन करने के लिए भेजा (जो खुद ही आलिंगन करने जैसा है)। लेकिन हे भृगुश्रेष्ठ, यद्यपि वे भावनाओं को रोकने का प्रयास कर रही थीं, किन्तु अनजाने उनके नेत्रों से अश्रु छलक आये।

श्लोक 33: यद्यपि भगवान् श्रीकृष्ण निरन्तर उनके पास थे और बिल्कुल अकेले भी थे, तो भी उनके

चरण उन्हें नवीनतर लग रहे थे। यद्यपि लक्ष्मी जी स्वभाव से चंचल हैं, लेकिन वे भी भगवान् के चरणों को नहीं छोड़ती थीं। तो भला जो स्त्री एक बार उन चरणों की शरण में जा चुकी हो, वह उनसे किस प्रकार विलग की जा सकती है?

श्लोक 34: पृथ्वी पर भार-स्वरूप राजाओं को मारने के बाद, भगवान् को राहत हुई। वे अपनी सैन्य शक्ति, अपने घोड़ों, हाथियों, रथों, पैदल सेना के बल पर गर्वित थे। युद्ध में भगवान् किसी दल में सम्मिलित नहीं

हुए। उन्होंने बलशाली प्रशासकों में शत्रुता उत्पन्न की और वे आपस में लड़ गये। वे उस वायु के समान थे, जो बाँसों में घर्षण उत्पन्न करके आग लगा देती है।

श्लोक 35: पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण अपनी अहैतुकी कृपा से अपनी अन्तरंगा शक्ति द्वारा इस लोक में प्रकट हुए और सुयोग्य स्त्रियों के साथ इस तरह भोग किया, मानो वे संसारी कार्यों में लगे हुए हों।

श्लोक 36: यद्यपि रानियों की मृदु मुस्कानें तथा बाँकी चितवनें

अत्यन्त विमल तथा उत्तेजक थीं, जिससे साक्षात् कामदेव भी मोहित होकर अपना धनुष त्यागने के लिए बाध्य हो सकते थे, यहाँ तक कि अत्यन्त सहिष्णु शिवजी भी उनके शिकार हो सकते थे, तो भी, वे अपने समस्त हाव-भाव तथा आकर्षण से भगवान् की इन्द्रियों को विचलित नहीं कर सकीं।

श्लोक 37: सामान्य भौतिकतावादी बद्धजीव सोचते रहते हैं कि भगवान् उन्हीं में से एक हैं। अपने अज्ञान के कारण वे सोचते हैं

कि पदार्थ का भगवान् पर प्रभाव पड़ता है, भले ही वे अनासक्त रहते हैं।

श्लोक 38: यह तो भगवान् की अलौकिकता है कि वे भौतिक प्रकृति के गुणों के संसर्ग में रहते हुए भी उनसे प्रभावित नहीं होते। इसी प्रकार जिन भक्तों ने भगवान् की शरण ग्रहण कर ली है, वे भी भौतिक गुणों से प्रभावित नहीं होते।

श्लोक 39: वे सरल तथा सुकोमल स्त्रियाँ सचमुच ही सोच बैठीं कि उनके प्रिय पति, भगवान् श्रीकृष्ण, उनसे आकर्षित हैं और उनके

वशीभूत हैं। वे अपने पति की
महिमाओं से उसी तरह अनजान थीं,
जिस प्रकार नास्तिक लोग परम
नियन्ता के रूप में भगवान् से
अनजान रहते हैं।

* * * * *

श्रीलगुरुदेव